B.A. Part III (1)
Hindi Hons
सगुण भक्ति काव्य
सूरदास -

डॉ० अर्चना कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एन०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न :- सूरदास के श्रृंगार वर्णन पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- सूरदास श्रृंगार के सर्वश्रेष्ठ रससिद्ध कवि हैं। इनके संयोग और वियोग दोनों पक्षों का जैसा मनोरम वर्णन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक ही लिखा है— "हिन्दी-साहित्य में श्रृंगार का रसराजत्व यदि किसी ने पूर्ण रूप से दिखाया है तो सूर ने।" ब्रज में रहते समय कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन संयोग श्रृंगार की नानाविध क्रीड़ाओं से व्याप्त होता है। दानलीला, मानलीला, पनघट लीला, चीर हरण, वंशी वादन इत्यादि संयोग श्रृंगार के अनेक चित्र हमें इनके श्रृंगार वर्णन में मिलते हैं।

इनके श्रृंगार वर्णन में राधा और कृष्ण आश्रय एवं आलम्बन हैं। कृष्ण के अंग-प्रत्यंग की शोभा, यमुना का किनारा आदि विभाव हैं। अनुभावों एवं संचारी भावों का तो बाहुल्य है ही। इस प्रकार शास्त्रीय दृष्टि से भी सूर के संयोग श्रृंगार का पूर्ण परिपाक हुआ है।

गोपियों के साथ कृष्ण का प्रेम कोई आकस्मिक घटना नहीं बल्कि वृंदावन के उन्मुक्त वातावरण में इस प्रेम का स्वाभाविक विकास हुआ है। महलों और कृत्रिम उपादानों से घिरे रहने वाला यह प्रेम नहीं है बल्कि यमुना के किनारे पलने वाला यह स्वच्छंद एवं उन्मुक्त प्रेम है। आपस के हास-परिहास से इस प्रेम का प्रारंभ होता है।

सूर के प्रेम की उत्पत्ति में रूपलिप्सा और साहचर्य दोनों का योग है। राधा और कृष्ण के प्रेम का प्रारम्भ सूर ने रूपाकर्षण द्वारा कराया है। कानों में कुंडल, हाथ में मोहक छड़ी, ~~[illegible]~~ शरीर पर पीताम्बर और अंग में चंदन का लेप किये कृष्ण

सूर का श्रृंगार

(2)

क्रमशः —

ब्रज की गलियों में खेलते-खेलते यमुना के किनारे पहुँचते हैं। वहाँ गोरा शरीर, नीला वस्त्र, पीठ पर वेणी, विशाल आँखें और अल्पवयस्का बालिका राधिका से कृष्ण का साक्षात्कार होता है। कृष्ण की आँखें राधा की आँखों में अटक गई —

खेलत हरि निकसे ब्रज-खोरी।
कटि कछनी पीताम्बर ओढ़े, हाथ लिये भौंरा चकडोरी॥
गए स्याम रवि-तनया के तट, अंग लसति। चंदन खोरी
औचक ही देखी तह राधा, नैन विशाल भाल दिये रोरी।
सूर स्याम देखत ही रीझे, नैन नैन मिलि परी ठगोरी॥

राधा और कृष्ण का साथ बचपन में हो गया। दोनों में नित्यप्रति प्रेम बढ़ता ही जाता है। दोनों एक दूसरे के घर जाने लगे तथा असंख्य प्रकार की लीलाएँ करने लगे। संयोग श्रृंगार के अनेक मनमोहक चित्र उभरकर सामने आने लगे। राधिका के साथ कृष्ण के गोदोहन का एक चित्र बड़ा ही मनमोहक है —

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।
मोहन कर ते धार चलति पय, मोहनि मुख अति ही छवि बाढ़ी॥

इसलिए आचार्य शुक्ल ने ठीक ही कहा है कि - वात्सल्य और प्रेम भाव की मनोवृत्ति का जैसा विस्तृत और पूर्ण परिज्ञान सूर को था वैसा किसी कवि को नहीं।

सूर का संयोग वर्णन जितना मनोरम एवं उल्लासपूर्ण है उनका वियोग वर्णन भी उतना ही करुणाव्यापित एवं मर्मस्पर्शी है। कृष्ण अक्रूर के साथ मथुरा चले जाते हैं। इसी घटना से सूर के वियोग श्रृंगार का प्रारम्भ होता है। कुछ दिनों तक कृष्ण के आने की बाट गोपियाँ जोहती हैं जब कृष्ण नहीं आते हैं तो गोपियों के आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है।

क्रमशः —